शेख़ फ़रीद – सबद १००
फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥
गोरां से निमाणीआ बहसनि रूहां मलि ॥
आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥९७॥

सार: जब शरीर अंततः ख़ामोश हो जाता है तब जीवन एक शांत समतलता को प्रकट करता है। वह तमाम भेद जिन्हें गढ़ने और मिटाने में लोग अपना पूरा जीवन बिता देते हैं, जैसे कि सामाजिक दर्जा, पहचान और संपत्ति, यह सब समुद्र की लहरों से मिट जाने वाले निशानों की तरह, धुंधले पड़ जाते हैं। अंत में, जो शेष रह जाता है, वह है साँझाअंतिम विश्राम स्थल और उन मूल तत्वों की ओर वापसी जिनसे हम बने हैं। इस स्पष्ट और नग्न सत्य के आलोक में, नैतिकता सामूहिक अनुभव के रूप में उभरती है, ठीक वैसे ही, जैसे किसी लंबी यात्रा के बाद यात्री एक ही तट पर विश्राम कर रहे हों। ऐसे क्षणों में, गहन चिंतन ही एकमात्र सार्थक प्रतिक्रिया रहती है।

फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥
फ़रीद कहते हैं कि वह आलीशान हवेलियाँ अब खाली पड़ी हैं और रहने की जगह अब नीचे ज़मीन में सिमट गई है। यह स्मरण कराता है कि, अंत में, जीवन के सभी रूप अनिवार्य रूप से मूल तत्वों में ही लौट जाते हैं।

गोरां से निमाणीआ बहसनि रूहां मलि ॥
अब उन साधारण क़ब्रों में वह लोग बस गए हैं, जिनके भीतर से जीवन-शक्ति जा चुकी है। यह मृत्यु की उस समतावादी प्रकृति की ओर इशारा करता है कि चाहे किसी का कुछ भी दर्जा हो, अंत में सभी पृथ्वी की शांत समाधी में ही सो जाते हैं, यहाँ उनकी सारी पहचान मिट जाती है।

आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥९७॥

शेख़ कहते हैं कि अपने भीतर झाँको और आत्म-चिंतन करो, क्योंकि विदा होने का समय आज या कल, कभी भी आ सकता है। यह स्वयं को दिया गया निर्देश है कि हम अपनी आंतरिक चेतना को प्राथमिकता दें क्योंकि हमारे इस भौतिक शरीर की अनिश्चितता और उसके अंत का होना तय है। (९७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमें आत्म-चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि इस दुनिया से हमारा प्रस्थान किसी भी पल हो सकता है, शायद आज ही या कल। यह गहन अंतर्दृष्टि हमारे भीतरी सामंजस्य को विकसित करने के लिए अत्यंत ज़रूरी पुकार का काम करती है, विशेष रूप से जीवन के अप्रत्याशित उतार-चढ़ावों और हमारे भौतिक अंत की निश्चितता को देखते हुए। इस चिंतनशील मानसिकता को अपनाने से हमारा मार्ग प्रकाशित हो सकता है और यह हमें अपने अंतिम क्षणों में गहरी स्पष्टता तथा जीवन के एक नए उद्देश्य को खोजने में मदद कर सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com